Raj Express (Indore), 5th October 2025, Page-04

आयोजन

आईआईटी इंदौर ने बीआईएस के सहयोग से मोबाइल टॉयलेट प्रबंधन पर की कार्यशाला

सिंगापुर में देखा प्रोजेक्ट हमारे यहां लागू करने की पहल

3 डी प्रिंटेड टॉयलेट प्रोजेक्ट कार्यशाला

● इंदौर/ राज न्यूज नेटवर्क

भारत जब उज्जैन सिंहस्थ कुंभ 2028 की तैयारियों में जुटा है, तब आईआईटी इंदौर भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के सहयोग से मोबाइल टॉयलेट प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। कार्यशाला का उद्देश्य बड़े आयोजनों के दौरान सुरक्षित, समावेशी और सतत् स्वच्छता प्रबंधन के लिए रणनीतियों पर विचार-विमर्श करना है। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी उद्घाटन सत्र में कहा स्वच्छता केवल अवसंरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव गरिमा और सतत् विकास का प्रतीक भी है। जब डिजाइन, प्रौद्योगिकी और शासन एक साथ काम करते हैं, तो भारत सार्वजनिक स्वच्छता के क्षेत्र में वैश्विक मानक स्थापित कर सकता है। सिंगापुर के एनटीयू विश्वविद्यालय के अपने दौरे का उल्लेख करते हुए प्रो. जोशी ने बताया मैंने वहां एक 3डी-प्रिंटेड टॉयलेट प्रोजेक्ट देखा था, जिसकी सराहना स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी की है। इस प्रकार के नवाचार भारत के स्वच्छता तंत्र को नया रूप दे सकते हैं।

सुरक्षा, गरिमा और विश्वास को करे सुदृढ़: कार्यशाला की प्रमुख विशेषता डॉ. आशुतोष मंडपे, सहायक प्रोफेसर, आईआईटी इंदौर की ओर से प्रस्तुत टीईईएस फ्रेमवर्क (तकनीकी, आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक) रही। डॉ. मंडपे, जो अपशिष्ट प्रबंधन और चक्रीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में अग्रणी विशेषज्ञ हैं, ने इस ढांचे के माध्यम से स्थल-विशिष्ट और समावेशी शौचालय डिजाइन का प्रस्ताव रखा। इनमें रैंप, सौर ऊर्जा आधारित प्रकाश व्यवस्था, स्मार्ट सफाई अलर्ट और बायोगैस उत्पादन इकाइयां जैसी विशेषताएं शामिल हैं। डॉ. मंडपे ने कहा, हमारा उद्देश्य केवल स्वच्छता सुविधाएं प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे तंत्र बनाना है जो प्रत्येक उपयोगकर्ता की सुरक्षा, गरिमा और विश्वास को सुदृढ़ करे। कार्यशाला में आईआईटी, आईआईएम इंदौर, सीएसआईआर प्रयोगशालाओं और विभिन्न सरकारी संस्थानों के विशेषज्ञों ने भाग लिया। चर्चा का केंद्र बिंदु रैपिड डिप्लॉयमेंट, नवीकरणीय ऊर्जा का एकीकरण और बीआईएस मानकों के अनुरूप शासन मॉडल था। इस अवसर पर अकादमिक, सरकारी और औद्योगिक क्षेत्रों से 80 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रयोगशाला तक सीमित नहीं हो अनुसंधान का उद्देश्य

समापन सत्र में प्रो. जोशी ने कहा अनुसंधान का उद्देश्य केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं होना चाहिए, इसका प्रभाव समाज में दिखना चाहिए, जो समुदायों को सशक्त बनाए, पर्यावरण की रक्षा करे और सभी के लिए गरिमा सुनिश्चित करे। कार्यक्रम में बतौर विशिष्ट अतिथि सुनील कुमार अरोड़ा, पूर्व सलाहकार, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार; डॉ. सुनील कुमार, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-नीरी; और डॉ. प्रियंक शर्मा, कार्यवाहक विभागाध्यक्ष, सिविल इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी इंदौर शामिल थे।